अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल, मुंबई.

परीक्षा सत्र : नवम्बर-दिसम्बर 2023

परीक्षा का नाम : विशारद पूर्ण (प्रथम प्रश्नपत्र)

विषय : गायन तथा स्वरवाद्य वादन

दि. 19/11/2023 समय : सुबह 9 से 12 कुल अंक : 75

सूचनाएँ : (१) प्रथम प्रश्न अनिवार्य है ।
(२) शेष प्रश्नों में से कोई चार हल किजिये ।
(३) सभी प्रश्नों के अंक समान है ।

प्र.1. राग पूरिया अथवा दरबारी कानडा में (11+2+2=15)
बडा ख्याल / मसीतखानी गत स्वरलिपीबद्ध कीजिये तथा उस राग के दो आलाप लिखिये। (कोई भी लिपी)

प्र.2. नीचे दिये तालोंकी जानकारी लिखिये (5+5+5=15)
तथा सूचनानुसार हल कीजिये। (कोई 3)

1) तिलवाडा-ठाह तथा चौगुन (पं.भातखंडे लिपी)
2) ताल सूलताल- ठाह तथा तिगुन (पं.पलुस्कर लिपी)
3) आडाचौताल- ठाह तथा दुगुन (पं.पलुस्कर लिपी)
4) झुमरा- ठाह तथा दुगुन (पं.भातखंडे लिपी)

प्र.3. अपने पाठ्यक्रम मे से साधारण ज्ञान के रागों (11+2+2=15)
में से दो मध्यम होनेवाले किसी राग में छोटा ख्याल / रजाखानी गत, दो तान / तोडो के साथ लिपीबद्ध कीजिये। (पं.भातखंडे लिपी)

प्र.4. अपने पाठ्यक्रम के साधारण अध्ययन के रागों (10+5=15)
में से किसी राग में धृपद या धमार पं.पलुस्कर लिपीमें स्वरलिपीबद्ध किजिये। साथ में स्थायी की तिगुन भी लिखिये।

प्र.5. जयपूर एवं आग्रा घराने का परीचय देकर वैशिष्ट्य लिखिये। $(7\frac{1}{2} + 7\frac{1}{2} = 15)$

प्र.6. अ) रिक्त स्थान की पूर्ती कीजिये। (10)

1. पूरिया का थाट ---------- है।
2. अ.भा.गां.म.मं. की स्थापना ---------- शहर में हुई।
3. ----------ताल में खाली न ही होती।
4. देड गुन याने ---------- लयकारी होती है।
5. भरतमुनी ने ---------- यह ग्रंथ लिखा।
6. दक्षिण हदुस्थानी संगीत में ---------- ताल है।
7. 'प्रेमपिया' इस नाम से ---------- ने बंदिशों का निर्माण किया।
8. नी़ सा ^{म}ग ^{म}प यह स्वरसंगती ---------- राग में है।
9. तराने के भाँती दक्षिण हदुस्थानी संगीत में -------गीतप्रकार है।
10. अगर तार की आंदोलन संख्या 360 है तो उस तार की लंबाई ---------- इंच होगी।

ब) उचित जोडिया बनाईये। (5)

अ	ब
1. उ.झाकीर हुसैन	1. 5 + 2 + 3 + 4
2. पं.भीमसेन जोशी	2. हवेली संगीत
3. ताल धमार	3. रविंद्र संगीत
4. अष्टछाप कवी	4. किराना घराना
5. गु.रविंद्रनाथ टैगोर	5. महान पखावज वादक
	6. महान तबला वादक

प्र.7. टिप्पणी लिखिये। (कोई 3) (5+5+5=15)

1. शुध्द, छायालग, संकीर्ण रागवर्गीकरण पध्दती
2. स्वरसप्तक का विकास
   (प्राचीन से आधुनिक काल तक)
3. पं. रविशंकरजी का सांगितिक योगदान
4. कर्नाटक संगीत के स्वर, ताल, राग का सामान्यज्ञान